the 10th April, 1989 publishing the Supplementary Agreement in respect of Central Financial Liabilities for the development and maintenance of National Highway Urban Links in Bihar, signed between the Government of India and the Government of Bihar, under section 10 of the National Highways Act, 1956.

[Placed in Library. See No. LT-89.]

REPORTS OF THE PUBLIC ACCOUNTS COMMITTEE

SHRI M. S. GURUPADASWAMY (Karnataka): I beg to lay on the Table a copy each (in English and Hindi) of the following Reports of the Public Accounts Committee:—

(i) Hundred and Fifty-ninth Report on action taken on Seventy-third Report (8th Lok Sabha) on Hiring of private buildings at Naraina Industrial Area, Phase-II New Delhi.

(ii) Hundred and Sixty-fourth Report on Alleged unauthorised importations of plant and machinery, misdeclaration and under invoicing of goods by a textiles manufacturer.

(iii) Hundred and Sixty-fifth Report on Procurement and Utilisation of Track Materials.

REPORT AND MINUTES OF THE COMMITTEE ON PUBLIC UNDERTAKINGS

THAKUR JAGATPAL SINGH (Madhya Pradesh): I beg to lay on the Table a copy (in English and Hindi) of the Fifty-seventh Report of the Committee on Public Undertakings on Food Corporation of India —Despatches of Sub-standard Wheat and Minutes of the sittings of the Committee relating thereto.

REPORT OF THE COMMITTEE ON THE WELFARE OF SCHEDULED CASTES AND SCHEDULED TRIBES

SHRI ANAND PRAKASH GAUTAM (Uttar Pradesh): I beg to lay on the Table a copy (in English and Hindi) of the Forty-eighth Report of the Committee on the Welfare of Scheduled Castes and Scheduled Tribes on the Ministry of Commerce—Reservations for and employment of Scheduled Castes and Scheduled Tribes in State Trading Corporation of India Limited.

MOTION REGARDING APPOINTMENT OF MEMBER OF THE RAJYA SABHA TO THE JOINT COMMITTEE OF THE HOUSES ON THE SHIPPING AGENTS (LICENSING) BILL, 1987

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF SURFACE TRANSPORT (SHRI RAJESH PILOT): I move the following Motion:—

"That Shri V. Narayanasamy be appointed to the Joint Committee of the Houses on the Shipping Agents (Licensing) Bill, 1987, in the vacancy caused by the resignation of Shri S. C. Jamir from the membership of the Rajya Sabha."

The question was put, and the motion was adopted.

I. STATUTORY RESOLUTION SEEKING APPROVAL OF PRESIDENT'S PROCLAMATION UNDER ARTICLE 356 IN RELATION TO THE STATE OF KARNATAKA

II. MOTION RECOMMENDING RECALL OF GOVERNOR OF KARNATAKA

गृह मंत्री (श्री बूटा सिंह): उपसभापति महोदया, सदन कल पूरा दिन कर्नाटक में जो राजनीतिक घटना घटी, उसके ऊपर चर्चा करता रहा। ...(व्यवधान)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (मध्यप्रदेश): घटना । ... (**व्यवधान**) ...

श्री बूटा सिंह : महोदय, विपक्ष के नेता श्री गुरूपदस्वामी इतने हतोत्साहित हुए कि उन्होंने अपना मानसिक संतुलन कल खो दिया । (**व्यवधान**) मुझे बहुत दुख है । मेरी और श्री गुरुपदस्वामी जी की 25 साल की दोस्ती हैं । हम एक दूसरे को 25 वर्ष से जानते हैं । सदन में एक ही बेंच पर भी बठ और उसके पश्चात सावजनिक जीवन में 25 साल कभी थोड़ा कभी ज्यादा, एक दूसरे के साथ मिलकर भी चल, मगर जो अपशब्द कल उन्होंने इस्तेमाल किए, मैं नहीं मानता हूंकि वे श्री गुरुपदस्वामी जी के अपशब्द है । वे एक राजनीतिज्ञ के अपशब्द हैं । गुरुपदस्वामी जी को इतनाजानने के बाद मैं ऐसा अनुभव करता था कि शायद ये भीष्म पितामह होंगे जो कि कभी भी किसी आक्रोश में आकर के, किसी विपत्ति में आकर के संतुलन नहीं खोएंगे । .. (**व्यवधान**) ...

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : यह शकुनी का उत्तर दे रहे हैं आप ।...(**व्यवधान**)...

श्री बूटा सिंह : मगर मुझे पता चला कि उनमें एक राजनीतिज्ञ कल बोला और ऐसे-ऐसे अपशब्द मुझ कहे जिससे मुझे अपना बचपन याद आ गया क्योंकि जातिय अभिमान केलोग हम लोगों के लिए ऐसे अपशब्द बोलते रहते थे, हम दलितों के लिए कोई नई बात नहीं है । . . (**व्यवधान**) ...

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : यह अन्याय है ...(**व्यवधान**)...

SHRI SATYA PRAKASH MALAVIYA (Uttar Pradesh): This is unfair.

SHRI PARVATHANENI UPENDRA (Andhra Pradesh): There was nothing communal or casteist in that. We have got the highest regard for the Home Minister. We know him. He is a gentleman as a man, but he is very brutal as the Home Minister.

PROF. C. LAKSHMANNA (Andhra Pradesh): The Minister should confine himself to the statement that has been made. He should not try to attribute motives to it. He should not go beyond what has been said by the Member.

THE DEPUTY CHAIRMAN: He is expressing a view.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : महोदया, मैं गृह मंत्री जी से अपील करूंगा कि कल जो कहा उसको छोड़िए और मुद्दे पर आइए ...

श्री बूटा सिंह : उनको छोड़ दूं तो मैं जवाब किसका दूं? महोदया, अगर मैं कल की बात छोड़ दूं तो मेरा कोई जवाब हो नहीं है । मुझे तो, मान्यवर, एक माननीय सदस्य के तर्कों का उत्तर देना होगा तभी मैं अपने कर्तव्य को निभा पाऊंगा । मगर मुझे सचमुच कल पूरी रात इस बात के लिए अफसोस रहा कि गुरुपदस्वामी जी जैसे विद्वत विवेक-बुद्धि के पुरुष को ऐसे अपशब्द इस्तेमाल करने पड़े । चूंकि इनके दल को क्षति हुई इसलिए उन्होंने अपना मानसिक संतुलन खो दिया और मेरी 25 साल की दोस्ती को टुकड़ा दिया । मगर मैं वह बातें नहीं कहूंगा जो मेरी इनकी दोस्ती में साझी थीं, लेकिन एक बात जरूर कहूंगा कि यह बात मेरे लिए नई नहीं है क्योंकि हमारे पुरखे सदियों से इस समाज में इस तरह की बेइज्जती का सामना करते आए हैं और आज देशके सभी अच्छी तरह से इस बात के लिए जागरूक है कि यह वृत्ति अच्छी नहीं है । आज हम जनतंत्र में चल रहे हैं आज हम समाजवाद का नारा लगाते है । श्री गुरुपदस्वामी जी जो सोशलिस्ट पार्टी के सदस्य रहे हैं आज शायद उनका समाजवाद एक राजा के नीचे दब ही गया हो, मैं नहीं कह सकता ...

श्री दीपेन घोष (पश्चिमी बंगाल) : वे तो आपके साथ थे...

श्री बूटा सिंह : महोदया, मैं कोई विद्वान नहीं हूं । कल मेरे से शेक्सपियर के नाटक की बात पूछी जा रही थी, एच० जी० वैल्स के नोवेल्स की बात कही जा रही थी मैं तो साधारण गरीब

परिवार में पैदा हुआ और गांव में पढ़ा हुआ मामूली सा, अपना परिवार का सदस्य हूं, मैंने एच० जी० वैल्स या शेक्सपियर के नाटक नहीं पढ़ होंगे, लेकिन मैं देशवासियों की सदबुद्धि को जानता हूं। वे अच्छी तरह से जानते हैं कि देश का हित किस में है और मुझे पूर्ण विश्वास है कि मौका मिलने पर कर्नाटक में वे देशभक्त लोग इन चीजों का जवाब देंगे, गुरुपदस्वामी जी और उनके दल को, जब उन्हें मौका मिलेगा कि विद्वान देशवासी है या चन्द एक गिने हुए प्रोफेसर जिन्होंने पब्लिक स्कूलों में पढ़कर लोगों को हमेशा बरगलाया है...

(Interruptions)

THE DEPUTY CHAIRMAN: Please don't interrupt. No comments on his speech. He did not interrupt Mr. Gurupadaswamy and he has a right to speak. Please let him reply.

श्री बूटा सिंह : महोदया, श्री गुरुपदस्वामी जी कहते कहते यहां तक पहुंच गए और उन्होंने मेरे ऊपर दोष लगाया कि—

"We should examine the role of Mr. Buta Singh in Karnataka. I am prepared for any examination. We have got enough evidence to prove, to show, that Mr. Buta Singh played a more dishonourable role in this Karnataka Assembly affair."

महोदया, मैं आप की अनुमति से करबद्ध प्रार्थना करता हूं और मैं यह आप के ही ऊपर छोड़ता हूं कि आप मेरे रोल को एक्जामिन कीजिए, उस रोल में यदि कहीं भी सिद्ध हो जाए, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मेरा कहीं भी हाथ है जनता पार्टी या जनता दल के गिराने में तो महोदया, मैं इस सदन में बड़ी से बड़ी सजा लेने के लिए तैयार हूं, अगर यदि ऐसा सिद्ध नहीं हो पाया तो क्या गुरुपदस्वामी जी भी इसी सदन के सामने यहां खड़े होकर कहेंगे कि बड़ी से बड़ी सजा वह लेने के लिए तैयार हैं, यह निर्णय मैं आप के ऊपर छोड़ता हूं।

यह इल्जाम लगा कर मैं सोचता था शायद गुरुपदस्वामी जी अपने वक्तव्यों में उदाहरण देंगे, कुछ ऐसी चीजें पेश करेंगे जिसमें वह साबित करेंगे कि मेरा रोल सरकार को गिराने में, एम० एल० ए० को खरीदने में, फिर बेचने में, फिर खरीदने में क्या रहा। मगर वह पूरा भाषण समाप्त करके बैठ गये, खाली एक दोष लगा कर कि मेरा रोल इसमें बहुत ही असाधारण रहा और उसका नीरिक्षण होना चाहिए, उसकी जांच होनी चाहिए, । मैं तैयार हूं। मुझे दुख इस बात का है कि मैं किसका विश्वास करूं, श्री गुरुपदस्वामी जी का या उनके नेता श्री रामकृष्ण हेगड़े जी का। यह 19 से लेकर 26 तक प्रतिदिन रोज कोई न कोई वक्तव्य जरूर देते हैं। सुबह के समाचार पत्रों में कुछ होता है और शाम के समाचार पत्रों में कुछ और होता है। हर रोज जनता दल के नेताओं के बयान बदलते रहते हैं। इसलिए मैंने आज यह मुनासिब समझा कि लेटेस्ट ब्यान आज के सुबह को सदन के सामने पढ़ कर सुनाऊं। इससे शायद गुरुपदस्वामी जी को इस बात का विश्वास हो जाए, मैं तो कहना नहीं चाहता, रामकृष्ण हेगड़े जी ने स्वयं माना है "टाइम्स ऑफ इंडिया" के साथ इंटरव्यू में। बंगलौर में उन्होंने कहा है:

"The main reason for the downfall of the Janata Dal Government was dissentions in the erstwhile Janata Party encouraged by some higher-ups in the party itself."

क्या गुरुपदस्वामी जी इसके लिए कोई इंक्वायरी कराएंगे ?

Who are the higher-ups in their party?

Who are the higher-ups in your party? Will you kindly go into it?

हेगड़े जी खुद कहते हैं

"...encouraged by some higher-ups in the party". This is what Mr. Ramakrishna Hegde, Vice-president of the Janata Dal has said in an interview to the Times of India newspaper.

डा० बापू कालदाते (महाराष्ट्र) : बोलिये, बोलिये... (व्यवधान)...

SHRI BUTA SINGH: It is your business, but kindly keep it to your business. Don't take your dirty business to me. You have no business. Let me tell you what his leader has to say... *(Interruptions)*...If you had known it, you should have informed this to Mr. Gurupadaswamiji who is otherwise my greatest friend. You should not have misled him. The next line he says: "I cannot blame the Congress for having exploited the situation. But let me tell, श्री आडवाणी जी कल यहां पर भाषण करके चले गये । अच्छा होता वह यहां होते और मैं उन से भी थोड़ा बहुत सम्बोधित हो जाता । उनके नेता . . .

माननीय सदस्य : उनके गुरु बैठे हैं ।

श्री बूटा सिंह : उनके सहयोगी हैं । मैं ऐसा मानता हूं कि बी० जे० पी० के नेता बी० बी० शिवप्पा, लीडर आफ दि बी० जे० पी० इन कर्नाटका लेजिस्लेटिव । आई डोंट नो, परसों जिस एम० एल० ए० ने लिखा था उसके बारे में तो कहते हैं वह पार्टी में नहीं था, लेकिन इनका मुझे मालूम नहीं कि वह पार्टी में है या नहीं ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : हैं ।

श्री बूटा सिंह : यह कहते हैं, 'हैं' ।

Shri B. B. Srivappa, leader of the BJP group in the Legislative Council. what he has said yesterday? He says: "The Janata Dal itself is to be blamed for its downfall. In fact, I had openly said that the Government was in danger of falling when Mr. Bommai announced that he would expand his Ministry for the second time." This is what the local leader says. The Vice-president of the All India Janata Dal Shri Ramakrishna Hegde and the local leader, say that I have no role. But Shri Gurupadaswamiji says that my conduct should be examined and he has named certain people.

जिनके बारे में उन्होंने कहा, बहुत लम्बा इन्टरव्यू दिया, बहुत इन्टरेस्टिंग इंटरव्यू दिया, मेरे पास टाइम नहीं है वरना मैं सारी चीजें, सारे तथ्य रखता ।

माननीय सदस्य : नाम बताइये ।

श्री बूटा सिंह : वह इंक्वायरी करायेंगे, मेरे ऊपर करेंगे तो उनके ऊपर भी कर लेंगे । श्री बोम्मई ने परसों के अखबार में कहा था after two days, he is going to disclose everything to the press. हम उम्मीद करते हैं कि वह भी डिस्क्लोज करेंगे । जनता दल की सरकार कैसे गिरी, कल मेरे बहुत से साथी सदस्यों ने श्री हनुमनतप्पा जी ने, श्रीमती मार्ग्रेट आल्वा जी ने, भंडारे जी ने, सुब्रह्मण्यम् जी ने और इधर के बहुत से सदस्यों ने उद्धारण दे कर इस बात का उल्लेख किया । मगर एक बात बार-बार समझ में नहीं आ रही है कि पूरे देश के जो बड़े-बड़े समाचार पत्र हैं और बहुत से साथियों ने कल समाचार पत्रों का नाम लेकर उनके उद्धारण, उनके कोटेशन, दे दे कर यह साबित किया कि जनता दल की सरकार कैसे गिरी । मैं ज्यादा वक्त नहीं लूंगा, सिर्फ यही कहना चाहता हूं कि जो सब से बड़े समर्थक हैं जनता दल के, सबसे बड़ा समर्थक समाचार पत्र 'इंडियन एक्सप्रैस' ने इसके मुख्य तीन कारण दिये हैं । छः पैरा में यह लीडिंग आर्टिकल है, शायद यह पहली बार है कि "इंडियन एक्सप्रेस" के सम्पादक ने यह अनुभव किया, जरूरी समझा, कि इस मुद्दे पर लीडिंग आर्टिकल लिखा जाय । इसमें स्पष्ट रूप से तीन बड़े-बड़े मेजर फेक्टर्स को इस बात के लिए जिम्मेदार ठहराया है कि जनता दल की सरकार कर्नाटक में कैसे गिरी । ये लम्बे पैरे हैं, मैं इनको पूरा नहीं पढ़ूंगा, सिर्फ एक-एक उद्धारण पेश करूंगा । सबसे पहला कारण उन्होंने बताया है —

"The Government has been brought down by the Janata men themselves. This is the first lesson that will be remembered by the people for the future".

दूसरे में उन्होंने कहा है "The second lesson the episode holds is for the Hegdes and the Dandvates. For months and months as Chandra Shekhar and others made one move after another, and did so openly, with no more inhibition than scruple, these decent honourable men decisted from confronting the manipulators and saboteurs, hoping thereby to avoid a break. But precipitating crisis will bring down the only Government our party has, they reasoned."

अब तो पहले इनको यही पता नहीं है कि इनकी गवर्नमेंट एक राज्य में है या दो राज्यों में है क्योंकि हरियाणा वाले भी कहते हैं कि जनता दल की गवर्नमेंट है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : उपसभापति महोदय : आप अवसर दें तो मैं इनसे पूछना चाहूंगा कि जब जनता दल की सरकार कर्नाटक में खुद गिरी थी, टूट रही थी, तो राज्यपाल को ऐसा आचरण करने की क्या जरूरत थी जिससे सारा दोष राज्यपाल पर आ गया ?

श्री बूटा सिंह : मैं आप का आभारी हूं, मैं इसी तरफ आ रहा था और जरूर आऊंगा । मैं ज्यादा समय नहीं लूंगा । मगर एक बात मत भूलिये वाजपेयी जी कि मैंने 12 बजे शुरू किया है ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अब 13 बज नहीं सकते हैं, अब तो 1 ही बजेगा ।

श्री बूटा सिंह : अब देखेंगे कि क्या बजेगा ।

महोदया, मैं अर्ज कर रहा था कि 'इंडियन एक्सप्रेस' ने सर्टिफिकेट दिया है कि किन कारणों से जनता दल की सरकार गिरी है। उसने सबसे पहला सर्टिफिकेट दिया है श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह को कि वह एक ऐसा नेता सामने आया है, जैसे 1977 में जनता पार्टी के बड़े-बड़े नेता फैसला नहीं कर पाते थे, उनसे भी बदतर नेता जनता दल को मिला है जिसको फुर्सत ही नहीं है कि यह देख सके कि एक प्रान्त में उनकी सरकार गिर रही है, उसके लिए जो कोई प्रयास नहीं किया गया। इसमें तीन कारण जो एक बुद्धिमान, पढ़े-लिखे आपके समर्थक और एक बहुत बड़े सुप्रसिद्ध पत्रकार ने तीन तर्क दिये हैं उसमें कहीं भी कूटनीति दिखाई नहीं है। उन्होंने यह भी कहा है—

"These properties should have been observed"—saying about the Government—"but they do not alter the basic fact;" and what is that basic fact? "The Opposition killed its own Government."

मैं नहीं समझता कि इतना कुछ कहने के बाद कोई दूसरी बात कहने की गुंजायश है कि कांग्रेस पार्टी ने या कांग्रेस पार्टी के किसी कार्यकर्ता ने या किसी नेता ने इस सरकार के बारे में या इस सरकार को गिराने का कोई प्रयास किया हो। आज तक न तो बोम्मई साहब, न हैगड़े साहब और न चन्द्र शेखर जी इसका कोई सबूत पेश कर पाये । मगर उनके नेता ने इल्जाम लगाया था जिसको मैं समझता था कि मैं उसका स्पष्टीकरण करूं ।

विरोधी दल के सभी नेताओं ने बड़े फख्र के साथ मौरल वेल्यूज, कंवेंशन और पार्लियामेंटरी प्रैक्टिस की बात की और हमारे ऊपर आरोप लगाया है कि हमको जब भी मौका मिला है हमने ऐसे-ऐसे लोगों को राज्यपाल बनाया है जिनकी राजनैतिक बैकग्राउंड थी, जो इलैक्शन में हारे हुए थे। श्री उपेन्द्र जी, श्री गुरुपदस्वामी जी और हमारे कामरेड श्री चित्त बसु जी बड़े जोर से कल भाषण कर रहे थे कि कांग्रेस पार्टी ने इस प्रकार की प्रक्रिया कायम की है। क्या मैं उनसे पूरी नम्रता के साथ पूछ सकता हूं कि जब थोड़े समय के लिये जनता पार्टी का शासन आया था तो उन्होंने क्या किया था ? उन्होंने 13 राज्यपालों की नियुक्ति की थी और इन 13 में से केवल 3 शासकीय थे और बाकी 10 पोलिटीशियन थे और उनमें 7 व्यक्ति ऐसे थे जो चुनाव हार चुके थे। अब मैं..(व्यवधान).

श्री सत्य प्रकाश मालवीय : सरकारिया कमीशन की रेकमेंडेशस तब नहीं आई थीं।

श्री बूटा सिंह : उस पर भी मैं आता हूं। पहले आप सुन तो लीजिये कि आपका किरदार क्या था। आज आप हमें उपदेश देते हैं मौरेलिटी का ...(**व्यवधान**)...

मैं उन भद्र पुरुषों का नाम नहीं पढ़ूंगा। क्योंकि उनमें से बहुत से पुराने स्वतंत्रता सेनानी भी हैं, इसलिये मैं उनका नाम नहीं लूंगा। मगर यह जरूर है कि जनता पार्टी के शासन में भी सक्रिय राजनैतिक कार्यकर्ताओं को गवर्नर की पोस्ट दी गई। उनमें कुछ लोग बड़े अच्छे थे। मैं ऐसा नहीं कहता कि सब के सब बुरे थे। उनमें से बहुत से लोग बहुत अच्छे थे..(**व्यवधान**)..उनमें रिटायर्ड भी थे, ऐक्टिव भी थे। मैं नाम नहीं पढ़ना चाहता। लेकिन सक्रिय कार्यकर्ता भी थे और रिटायर्ड भी थे। सबके सब प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। मैं किसी व्यक्ति की बात नहीं कह रहा हूं। मगर मैं यह कह रहा हूं कि आपने कौन सी प्रक्रिया कायम की थी, आपने कौन सा कन्वेंशन इस देश में कायम किया? आज आप यह तर्क दे रहे हैं। यह तो शुरू से आपके राज से चला आ रहा है। कैसे असेंबलीज का हनन किया, कैसे असेंबलीज को भंग किया, वह दूसरी बात है।

यहां पर कहा गया कि गवर्नर साहब ने असेंबली क्यों काल नहीं की? तो कल मैंने दफ्तर में जाकर देखा। मैंने देखा कि 19 अप्रैल और 21 अप्रैल को जो राज्यपाल श्री वेंकटसुबैया की रिपोर्ट है और उससे पहले जो 29 दिसम्बर, 1977 को तत्कालीन राज्यपाल श्री गोविन्द नारायण की रिपोर्ट है उनमें जरा भी फर्क नहीं। अगर फर्क है तो सिर्फ इतना कि जहां उसमें गोविन्द नारायण जी के दस्तखत हैं, यहां वेंकटसुबैया के दस्तखत हैं। दूसरा फर्क यह है कि क्योंकि गोविन्द नारायण जी एक बड़े कुशल शासक थे इसलिये उनकी रिपोर्ट के 6-7 पन्ने हैं और श्री वेंकटसुबैया क्योंकि एक सरल व्यक्ति हैं, एक सीधे-सादे व्यक्ति हैं इसलिये उनकी रिपोर्ट के 3 पन्ने हैं। फर्क सिर्फ इतना है। मैं इसकी धारा 10 पढ़ता हूं।

SHRI PARVATHANENI UPENDRA: They are not all written in Delhi.

SHRI N. K. P. SALVE (Maharashtra): Both were written in Delhi?

SHRI PARVATHANENI UPENDRA: All were written in Delhi.

SHRI N. K. P. SALVE: All of them?

श्री बूटा सिंह: मैं उनकी रिपोर्ट की धारा 10 पढ़ता हूं।

"Ordinarily, the testing of the strength of the Ministry should be done on the floor of the House. But, in the present situation, the following special features have been urged before me.

Firstly, the Chief Minister has been suspended.

Seconly, already some incidents have occurred which indicate that such pressures have been exerted and the Members are being intimidated and bought."

इसके बारे में आपने कल 'स्टेट्समैन' की रिपोर्ट देखी होगी कि ओपन सेल काउंटर खुल गया था बंगलौर में और सेल काउंटर भी बचा नहीं पाया इनको। इसकी धारा 12 में है कि:

"There are indeed grave apprehensions in various circles that undue influence will be used to win over support for the Government by the time the Assembly meets. But if it is the view that the strength of the Government must be tested on the floor of the House, then this practice of buying back MLAs will vitiate the whole thing."

This was the argument given by Shri Govind Narainji in 1977.

The same argument has been given by Shri Venkatasubbaiah in his letter. Then what is the objection? That is number one. Number two: आपने यह कहा। एंटी डिफेक्सन ला के बारे में आपने यहां चर्चा की। मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि आडवाणी साहब ने जिक्र करते करते कल इस बात को भी कहा। आडवाणी साहब यहां तक कह गये कि इसको तो मैं गलती मानता हूं, मगर एक चीज मैं कल आडवाणी साहब से पूछना चाहता था कि जब वह असेम्बली भंग की गई थी तो समाचार-पत्रों के नाम जो प्रेस नोट किया गया था वह किस मिनिस्ट्री से दिया गया था, जिसके सभापति श्री एल. के. आडवाणी थ। उस प्रेस नोट में बड़ा स्पष्ट कहा गया यह प्रेस नोट गवर्नमेंट आफ इंडिया का है, उस वक्त आडवाणी साहब आई.एंड बी. मिनिस्टर थ। उसमें यह कहा था कि :—

"Disturbing reports, however, were being received about inducements being offered, large sums of money being offered or paid and intimidation and threats being held out to legislators to win them over."

यह दो कारण थे श्री गोविन्द नारायण जी की रिपोर्ट में और यही दो कारण श्री वेंकटसुब्बया जी की रिपोर्ट में है। उस वक्त असेम्बली काल की जा चुकी थी लेकिन इन्होंने असेम्बली काल करने का उस वक्त प्रयास किया जब इन्हें यह मालूम हो गया कि इनकी गवर्नमेंट महाराष्ट्र में जा चुकी है। बड़ा फर्क है। मैजोरिटी में रहते हुए असेम्बली काल करे तो उसके और मायने होते हैं और मेजोरिटी लूज कर के असेम्बली काल करने का दावा करना मैं समझता हूं असेम्बली को एक इंस्ट्रूमेंट कर के इस्तेमाल करने की कोशिश की जा रही थी, इसलिए बड़ा अन्तर है।

अब पश्न उठता है एंटी डिफेक्शन ला का मेरे विद्वान साथी यहां पर सांसद बैठे हुए हैं एंटी डिफक्शन ला जो है इसका सीधा सम्बन्ध स्पीकर से है और इसका गवर्नर के साथ सम्बन्ध नहीं है। मगर मैं एक श्न पूछता हूं किसने रोका था श्री बोम्मईजी को स्पीकर के पास जा कर शिकायत करने से कि मुझे खबर मिली है कि 19 एम.एल.एज. ने गवर्नर के पास जाकर मेरे से सपोट हटाने की चिट्ठी लिख कर दी है। तो उसी ला के अन्तर्गत मुख्य मन्त्री अपनी ही पार्टी के स्पीकर से उनको डिसमिस करवा सकते थ गोपालस्वामी जो यहां पर बठे हुए हैं उनको अच्छी तरह से यदि है कि तमिलनाडु में क्या हुआ था। उस वक्त के स्पीकर ने टेलीफोन सुनने पर पांच एम. एल. ए. डिसमिस कर दिये थे। अगर यह बात थी तो बोम्मई साहब स्पीकर के पास जाते और कहते कि यह 19 एम. एल. ए. छोड़ कर चले गये हैं, इनको डिसमिस कर दीजिए, और उनकी मेजोरिटी बनी रहती। टोटल में से 19 और कम हो जाते और बोम्मई साहब की शानदार मैजोरिटी रहती और फिर असेम्बली काल करने की जरुरत भी नहीं थी। तो गुरुपदस्वामी जी, मैंने तो यह राय बोम्मई साहब को नहीं दी थी कि आप न जाइये स्पीकर साहब के पास। आपके लिए दरवाजे खुले थे। आप क्यों नहीं गये ?

मानव संसाधन विकास मंत्री (श्री पी० शिवशंकर) : सपोट विदड्रा करना अलग बा, है और पार्टी छोड़ना अलग बात है।

श्री बूटा सिंह : कल इस बार की बड़ी चर्चा की गई कि कांग्रेस शासित राज्यों मे ऐसा होता है तो वहां क्यों ऐसा नहीं किया जाता है।

मैं एक उदाहरण देना चाहता हूं नागालैंड का। नागालैंड में ऐसी परिस्थिति पैदा हुई थी और सौभाग्यवश में पार्टी की तरफ से आब्जरवर के रूप में वहां बैठा हुआ था। जब वहां हमारी पार्टी के 13–14 एम० एल० एज० ने स्पीकर को लिख कर दे दिया तो उस वक्त बागी नेता श्री चिशी मेरे पास आए और कहने लगे कि कोई बात नहीं, अगर हमने लिख कर दे दिया है तो आप इसका फिक्र मत करिये, हम लिखे हुए को वापस ले लेंगे, आप केवल इतना कह दीजिये कि आप लीडर बदल देंगे। मैंने कहा कि हम ऐसा नहीं करेंगे। आप लोगों ने जो कुछ किया है यह अनकांस्टीट्यूशनल है, यह पार्टी का मामला था, आप

[श्री बूटा सिंह]

पार्टी को कहते मगर, आपने ऐसा किया है इसलिए हम यह रास्ता अख्तियार नहीं करेंगे, हम गवर्नर को रिपोर्ट का इन्तजार करेंगे, हम लोगों के पास जाना पसंद करेंगे। हम आपके प्रेशर के नीचे, दबाव के नीचे किसी किस्म का फैसला बदलने की कोशिश नहीं करेंगे। हमने उनको यह कहा, असेम्बली डिजाल्व हुई। कौन कहता है कांग्रेस शासित राज्यों में असेम्बली डिजाल्व नहीं हुई। मिजोरम में असेम्बली डिजाल्व हुई। मिजोरम में वन-थर्ड डिविजन हो गया था उस वक्त की रूलिंग पार्टी में और उन लोगों ने लिख कर दे दिया था। राज्यपाल महोदय को कि हम कांग्रेस की मदद से सरकार बनाना चाहते हैं, मगर हमने उस बात को नहीं माना। हमने कहा कि यह असेम्बली लोगों के कांफिडेंस से बनती है और लोगों को इसका हक होना चाहिए। इसमें वेंकटसुबैया का क्या कसूर है। उन्होंने सत्ता कांग्रेस को नहीं दी। उन्होंने फैसला कर दिया राज्यपाल होने के नाते। जहां यह एक कांस्टीट्यूशनल इंस्टीट्यूशन है। वहां एक कांस्टीट्यूशन इंस्ट्रूमेंट भी है। यदि लिखित रूप से चुने हुए एम० एल० एज० की चिट्ठियां आ जायें तो वे जनता दल के जनरल सेक्रेटरी थोड़े ही थे कि वे बोम्मई को बुलाते कि मेरे पास चिट्ठियां आ गयी हैं, ले जाइये और जा कर इनके बारे में जांच करिये। वे राज्यपाल थे, वाजपेयी जी, उनको कुछ करना था और उनके पास दूसरा कोई चारा ही नहीं है संविधान के अंतर्गत। यदि उनके पास लिखित रूप में चिट्ठियां पहुंच जायें और कांस्टीट्यूशन अथारिटी उसको वेरीफाई कर दे तो वे क्या करते ? वी० पी० सिंह को लिखते, हे गड़े को लिखते, बोम्मई को लिखते कि भाई आपकी पार्टी टूट रही है, आपकी सरकार टूट रही है, आप संभाल लीजिए, ये चिट्ठियां मेरे पास आई हैं, वापस ले जाइये। यह राज्यपाल का काम नहीं है। इसी के लिए तो उनके पीछे लठ्ठ लेकर पड़ गये हैं श्री गुरुपदस्वामीजी कि राज्यपाल जी ने बहुत बुरा काम किया, इसलिए उनको निकाल देना चाहिए। जब जनता दल, पार्टी को मान्यता देने की बात थी तो उन्होंने फैसला ठीक किया, उनका इंडिपेंडेंट फैसला था, गवर्नर का इंडिपेंडेंट फैसला था, किसी को किसी किस्म की शिकायत नहीं थी . . . (व्यवधान)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: वह आप को पसंद नहीं आया।

श्री बूटा सिंह: बिल्कुल, सरासर असत्य है, गलत है। ऐसी कोई बात नहीं हुई, न किसी ने उनसे कहा, न उन्होंने किसी से पूछा। उन्होंने एक राज्यपाल के नाते निर्णय लिया और उन्होंने अपना निर्णय घोषित किया। यह निर्णय भी उन्होंने राज्यपाल के नाते लिया और राज्यपाल के नाते ही संविधान के अंतर्गत जो उन्होंने ठीक समझा, वह किया।

सबसे पहली बात, महोदया, मैं मान्यवर विपक्ष के नेताओं से पूछूंगा और मुझे पूरा विश्वास है कि श्री चन्द्र गौडा जी उस बात का जवाब देंगे। 19 को चिट्ठियां गयी, उनके ऊपर दस्तखत सही थे। किसी ने आज तक इस बात को चुनौती नहीं दी। बाद में 7 लोगों ने अपने दस्तखत विड्रा किये। वे चिट्ठियां भी एक सदस्य लेकर गये थे और 7 चिट्ठियां भी रचैया जी और एक लीलावती महोदया लेकर गयी थी और उनके ऊपर भी किसी ने आपत्ति नहीं की। न तो गवर्नर के सामने 19 पेश किये गये, न गवर्नर के सामने 7 पेश किये गये। स्वाभाविक था कि गवर्नर को संदेह था। पहले के बारे में संदेह था तो उन्होंने उसी वक्त उसकी तहकीकात की, दूसरे के बारे में उन्होंने कहा कि ये दस्तखत मैं दिखवाऊंगा। उनमें एक श्री वासवनप्पा, जो फिर से वापस गये, उन्होंने बहुत स्पष्ट शब्दों में कहा अब मैं नहीं चाहता हूं कि सदन का समय बरबाद करूं क्योंकि कल मिसेज अल्वा जी ने पूरी चिट्ठी पढ़ कर सुनाई थी। लेकिन एक चीज जो उन्होंने लिखी उसका जिक्र मैं जरूर करूंगा :

"His Excellency, the Governor of Karnataka, Raj Bhavan,

BANGALORE.

Respected Sir,

I had given your good self a letter stating that I have withdrawn my

support to the Government headed by Shri Bommai. It is a welcome thing, you have already initiated the Constitutional action. But, subsequently, yesterday, some of the members of the Bommai Cabinet..."—it was not Mr. Buta Singh, Gurupadaswamyji. This man says that it was the members of the Bommai Cabinet:—

"...brought undue pressure on me and physically forced me to send a different type of letter. This might have also been sent to you by them. But today, even at this hour, I affirm and confirm that I have withdrawn my support to the Government headed by Shri S. R. Bommai and my earlier decision stands even today to this hour."

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY (Uttar Pradesh): Mr. Basavannappa is also a Scheduled Caste Member.

AN HON. MEMBER: So what?

श्री बूटा सिंह : तो इस किस्म की बातें वहां चलीं । आपने वैल्यू बेस्ड पोलिटिक्स की बात कही . . . (व्यवधान)

SHRI D. B. CHANDRE GOWDA (Karnataka): My point is whether all those letters of—19 people were taken by undue influence or coercion. Was this fact verified by the Governor? This is my question.

श्री बूटा सिंह : महोदया, जो राज्यपाल महोदय ने लिखा है अपने पत्र में, उसमें उन्होंने यह लिखा है कि उन्होंने स्वयं दस्तखत किये । इसके आगे जाकर न राज्यपाल महोदय ने कहा, न मुख्य मंत्री ने कहा । आज तक मुख्य मंत्री ने नहीं कहा ।

SHRI D. B. CHANDRE GOWDA: There were other members also.

श्री बूटा सिंह : और जो 7 लोगों ने चिट्ठियां वापस लीं, उन्होंने यह नहीं कहा कि हमने पहले दस्तखत गलत किये, या बहकावे में आकर किये, उन्होंने कहा कि हमने किये, मगर हम उनको वापस लेना चाहते हैं । इसलिए कहीं भी यह प्रश्न उत्पन्न नहीं हुआ । फिर भी श्री गुरुपदस्वामी जी ने वैल्यू बेस्ड पोलिटिक्स की बात कही ।

SHRI D. B. CHANDRE GOWDA: I am trying to enlighten myself and I am asking the Home Minister. आप क्यों चिल्लाते हैं ?
I am trying to get myself enlightened. I wanted to know from the Home Minister whether he got any information about the other MLA, Mr. Babu Reddy Tungal, wh went to the press and said: Yes, a signed, bdank paper has been utilized.

श्री बूटा सिंह : मेरे पास तो, महोदया, वही इंफर्मेशन है जो राज्यपाल महोदय ने अपनी चिट्ठी में दी है । इसलिए मैं उसके आगे नहीं जा पाता ।

मैं तो यह अर्ज कर रहा था कि at no stage even after this—पहले 19 ने दिये, बाद में सात ने वापस लिये—जनता दल के लोगों ने कहा कि बारह ने वापस लिए । फिर जनता विधायक दल की मीटिंग हुई, उसमें मैजारटी नहीं बन पायी ।

फिर उसके पश्चात जनता दल के एस० एम० एज० एक प्रोसेशन में राज भवन गये और वहां जा कर भी उन्होंने यह नहीं कहा कि राज्यपाल महोदय, यह देख लीजिये हमारी मैजारटी है । उन्होंने जाकर यही कहा कि राज्यपाल महोदय, हमें मौका दीजिये, हम आप को मैजारटी बना कर दिखा देंगे । (व्यवधान)

वर्मा जी आप सब जानते हैं, इन बातों को छोड़िये । इसमें जो सबसे बड़ी बात मैंने नोट की है, वह यह है कि प्रोसेशन विधान सौध से चला, पर एक श्रीमान सड़क पर ही बैठ गये और वह कहने लगे कि मैं अंदर नहीं जाऊंगा । जरा पता करो, उसके मन में पाप तो नहीं था । वह क्यों बाहर बैठ गये?

एक माननीय सदस्य : पूरे पैसे नहीं मिले होंगे । (व्यवधान)

श्री बूटा सिंह : श्री रामकृष्ण हेगड़े ने कहा कि मैं तो राजभवन में जाऊंगा नहीं। शायद इसी में--दी कैट इज़ लाइन न दिस बैंक। Shri Gurupadaswamy must investigate into it. क्यों वह नहीं गये ? क्यों नहीं उन्होंने आंख से आंख मिलाई राज्यपाल से ? उसमें कोई गड़बड़ तो नहीं थी ? खाली उन्होंने इतना ही कहा... **(व्यवधान)**

डा० बापू कालदाते : उन्होंने कहा था कि मैं परेड नहीं करूंगा--कि मैं गवर्नर के सामने परेड नहीं करूंगा, यह बयान उन्होंने पहले ही दिया था।

श्री बूटा सिंह : मैंने तो जो मेरे मन पर प्रभाव हुआ, उसको सदन के सामने रखा है। श्री रामकृष्ण हेगड़े राज्यपाल के सामने पेश नहीं हो पाये और वह गेट के बाहर बैठ गये और यह कह कर बैठ गये कि मैं तो इसमें बेइज्जती मानता हूं, मैजारटी दिखाने में बेज्जती मानता हूं।

कल यहां वैल्यू-बेस्ड पालिटिक्स की बहुत बात चली और श्री रामकृष्ण हेगड़े काफी समय से हमारे देश की राजनीति में आदर्श की बात करते हैं और सिद्धांत की बात करते हैं। मैं थोड़ा सा उदाहरण दूंगा कि पिछले दो सालों में यह वैल्यू कैसे फलक्टुएट होती रही, वाजपेयी जी। यह वैल्यू फलक्टुएट होती रही। सब से पहले एक वैल्यू बनी। जब राज्य सभा के इलैक्शन हुए, तो दो लाख की वैल्यू थी। वैल्यू का माने मैं कीमत मानता हूं। इससे ज्यादा नहीं मानता हूं।

श्रीमन्, मैं स्वयं भुक्तभोगी हूं, मैं आई-विटनेस हूं, जेठमलानी जी, उस दिन मैं बंगलौर में था, जब यह वैल्यू दी जा रही थी। राज्य सभा के इलैक्शन में मैं पार्टी के तरफ से आब्जरवर बन कर बैठा हुआ था।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : तभी श्री गुरुपदस्वामी ने आपको छोड़ दिया।

श्री बूटा सिंह : यह दो साल पहले की बात है और महोदया, जो मेरे साथ हुआ है, मैं आपको इस सदन के सामने बताना चाहता हूं।

रात को डेढ़ बजे के करीब हमारे एम० एल० ए० हमारे पास आए कि हमारे कमरे में, जनता पार्टी के लोग लाखों रुपये के नोटों का गट्ठा फैंक कर चले गये हैं। हमने अपनी असेम्बली की पार्टी को वहां बुलवाया, जहां मैं ठहरा हुआ था। सारी रात हमने जाग कर काटी और वह जो पैसा हमारे दो एम० एल० एज० के होस्टल में ,जो घर में फैंक गये थे, अगले रोज हमारी दल की नेता स्पीकर के पास लेकर गयी, लिखित रूप में कम्प्लेंट दी कि जनता पार्टी के नेताओं ने यह रुपया हमारे एम० एल० ए० को घूस के तौर पर दिया है, इसको हम आपके सामने रखते हैं। वह रुपया आज भी स्पीकर के पास पड़ा है। ... **(व्यवधान)**

श्री वीरेन्द्र वर्मा (उत्तर प्रदेश) : वह तो कहते हैं कि उन्होंने ही इक्ट्ठा करके वह दिया था।

श्री बूटा सिंह : वाह, वाह, वर्मा जी, आप सब कुछ उधर की ही सुनते हैं। आपको वही कुछ अच्छा लगता है। आप को हेगड़े पुरान की कथा अच्छी लगती है, भागवद् पुरान की कथा आपको अच्छी नहीं लगती है। हेगड़े-पुरान की कथा आप पढ़ते है।

तो श्रीमन् 1987 में कर्नाटक के राजनीतिज्ञों की वैल्यू दो लाख थी। इसके बाद आपको मालूम होगा श्री रामकृष्ण हेगड़े ने कहा था कि मैं अपनी पार्टी से कंफीडेंस लूंगा, वेल्यू बढ़कर 5 लाख रुपये हो गई 5 लाख रुपये प्रति एम०एल०ए० देकर सेल्फ कंफीडेंस लिया था श्रीमन् ने जो कहते थे कि मैं परित्याग कर रहा हूं। पार्टी ने कहा नहीं, तुम्हारी जगह कोई दूसरा बन ही नहीं सकता। फिर इस्तीफा वापस हुआ था, फिर सेल्फ-कंफीडेंस लिया था। उस वक्त कहते हैं कि एक एम०एल०ए० की कीमत दो लाख से बढ़कर पांच लाख हो गई थी। फिर श्री बोम्मई को इलेक्ट करवाना था . . . **(व्यवधान)** भई

मैं तो सुना-सुनाया ही कह सकता हूं। बहुत से दोस्त आप ही के हैं। बहुत से दोस्त आप ही के थे जिन्होंने मुझे बताया। . . . **(व्यवधान)**

डा० बापू कालदाते : आप अगर भोगी हैं तो आप कहिए लेकिन यह सुना-सुनाया तो मैं भी कह दूं कि आप 10 लाख ले चुके हैं। क्या पता है ?

श्री बूटा सिंह : अभी तो अखबारों में 'स्टेट्समैन' ने लिखा है कि 20 लाख लेटेस्ट है। वह कहते हैं कि दस तो कैश डाउन पेमेंट थी और दस आफ्टरवर्ड्ज दिया जाता था। 'स्टेट्समैन' तो मेरा नहीं है, वह तो आपकी मदद करते हैं। फिर तीसरी बार वेल्यू और बढ़ गई, जब बोम्मई को इलेक्ट करवाना था। उस वक्त क्योंकि थोड़ा सा प्रैट था इसलिए कीमत पांच लाख से दस लाख तक बढ़ गई। फिर जनता पार्टी में विभाजन हुआ और इनको एफीडेविट लेने थे, उसके लिए और कीमत बढ़ा दी। उस वक्त कीमत और बढ़ी। उसके बाद मिनिस्ट्री एक्सपेंशन हुई। पहली एक्सपेंशन हुई, दूसरी एक्सपेंशन हुई। उसमें जो लोग नहीं आ पाए उनके लिए मारुति कार, कार्पोरेशन की चेयरमैनशिप, बंगलौर में प्लाट मिले हुए हैं। यह ऐसी बात नहीं जो मैं सुनी-सुनाई कह रहा हूं। आप इन्क्वारी करवा कर देखें कि कितने एम०एल०एज० को इन दिनों में, जिस वक्त की मैं बात कर रहा हूं, जिस पीरियड की मैं बात कर रहा हूं, कितने एम० एल०एज० को बंगलौर में प्लाट मिले, मारुति कारें मिलीं और चेयरमैन बने। यह वेल्यू बढ़ती चली जा रही है। अब यह जो लेटेस्ट है इसके बारे में तो समाचार-पत्रों ने स्वयं लिखा है। पहले जो कैश-डाउन पेमेंट हुआ करती है और बाद में जब गवर्नर साहब के सामने जाकर चिट्ठी दें तो फुल एंड फाइनल पेमेंट हो जाती है। यह तो आपकी वेल्यू बेस्ड पोलिटिक्स की बात है।

कल किसी ने यहां पर जिक्र किया था कि श्री राम कृष्ण हेगड़े बहुत आदर्शवादी हैं। उनके युवराज पुत्र एक मुकदमे में फंस गए। एक बहुत बड़े काबिल वकील साहब उनको मिले और जब वह मुकदमा ऐन फाइनल होने के करीब पहुंचा तो कमीशन की छुट्टी कर दी और वकील साहब बहुत बड़े नेता बनकर आ गए। जब इनका इलेक्शन हुआ था तो वहां किस प्रकार का उधम मचा था ? ओपन इंक्लाब हुआ, विद्रोह हुआ और किस तरह से वोटें बांटी गईं और जो कोटा बांटा गया उसमें कहीं ज्यादा ले गए क्योंकि वेल्यू बढ़ी हुई थी। सबके सब खरीदे हुए थे इन रीयल टर्म्ज और मैं तो यह समझ सकता हूं कि पार्टी की दी हुई लिस्ट के पूरे के पूरे एम०एल०एज० मिल जाएं यही बड़ी गनीमत है, मगर उसकी लिस्ट से कहीं ज्यादा मिल जाएं तो समझना चाहिए कि दाल में कुछ और भी है। यह तो आपकी वेल्यू बेस्ड पोलिटिक्स की बात है। बहुत से माननीय सदस्यों ने यहां पर इन चीजों का जिक्र किया कि कैसे कर्नाटक में वेल्यूज समय-समय पर बदलती रहीं और कैसे राजनीति का दुरुपयोग होता रहा।

सबसे पहला जो मेरे पास मेमोरेंडम आया है, सरकार की ओर से, जो शासन की ओर से आया है जो इस वक्त की कर्नाटक की फाइनेंशियल पोजीशन है मैंने जब वह मेमोरेंडम पढ़ा तो मेरे हाथ कांप रहे थे कि इतना भारी बोझा जो गवर्नमेंट अपने एम्प्लाइज को सेलरी देने के लिए सरकारी बिल्डिंगज गिरवी रख रही हो, जो गवर्नमेंट अपने सरकारी कर्मचारियों को भत्ता नहीं दे पाई हो और अवकाश प्राप्त सरकारी कर्मचारियों को पेंशन न दे पाई हो ? यह तो अभी माचली की बानगी है। क्या-क्या होता रहा होगा, यह तो जैसे-जैसे समय बीतेगा वैसे-वैसे पता चलेगा। लेकिन एक चीज जिसका उल्लेख कल मेरे साथी हनुमनतप्पा जी, श्रीमती आलवा जी ने किया, वहां के राजनीतिक नेताओं को खास करके

[श्री बूटा सिंह]

जनता दल के नेताओं को फुर्सत ही नहीं थी कि वह लोगों के हित के लिए शासन की ओर ध्यान दे पाएं । पूरे-पूरे दिन उन्होंने गिन कर बताए कि कौन मुख्यमंत्री कितने दिन रहा ? कितने दिन राज्य में रहा ? कितना रुपया उन्होंने अपनी पब्लिसिटी पर खर्च किया ? वे किस प्रकार का पब्लिसिटी मेटीरियल भेजते थे ? शायद बड़े-बड़े विकसित देश भी उस तरह की पब्लिसिटी नहीं करवाते होंगे अपने नेताओं की, जितनी पब्लिसिटी कर्नाटक सरकार की तरफ से होती रही । वह सारा लिटरेचर हम यहां पर देखते रहे ।

महोदया, मैं इन सभी चीजों पर जाकर कुछ मूल प्रश्नों के ऊपर माननीय सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं । मान्यवर सदस्यों ने सरकारिया कमीशन की रिपोर्ट का बड़ा जिक्र किया । इसमें बहुत अच्छे, बड़े उपयोगी सुझाव सरकारिया कमीशन ने दिए हैं, जिस पर कन्सलटेटिव कमेटी में चर्चा हुई, इस मान्यवर सदन में चर्चा हुई, लोकसभा में भी चर्चा हुई और अब सब मुख्य मन्त्रियों को बुलाकर उस पर बातचीत कर रहे हैं । यह एक राष्ट्रीय प्रश्न है, किसी पार्टी का प्रश्न नहीं है । यदि आपको सरकारिया कमीशन के बारे में कुछ सुझाव देना है तो इतना जरूर मन में रखिए कि आप उन सिद्धांतों को अपनी पार्टी के हित से ऊपर लेकर सोचने के लिए तैयार हैं । मैं मानता हूं कि 40 वर्षों में श्रीमती इंदिरा गांधी जी की कृपा से यह एक नया डाक्यूमेंट मिला है, जो कंस्टीट्यूशन के अंतर्गत, काम करते-करते राष्ट्र ने प्राप्त किया है । यदि उसके ऊपर आप अपने दल के हित के दृष्टिकोण से देखेंगे, पार्टी के दृष्टिकोण से देखेंगे, दोषारोपण के दृष्टिकोण से देखेंगे तो सरकारिया कमीशन रिपोर्ट से कुछ निकलने वाला नहीं है । यदि आप इन चीजों को पीछे छोड़कर समूचे देश के हित में सोचेंगे तो मैं यह दावा कर सकता हूं कि भारत सरकार की ओर से हम भी आपके साथ उन प्रश्नों के ऊपर जाने के लिए तैयार हैं, आपका सहयोग लेने के लिए तैयार हैं, सबसे पहले के लिए तैयार हैं, मगर उसके लिए आपको अपना मन साफ करना होगा, यह वोट खींचने की बात छोड़नी होगी, समूचे राष्ट्र को सामने रखकर चलना होगा और तभी हम कहीं पहुंच पाएंगे । अगर आप यह समझें कि उसके ऊपर एकतरफा कुछ कार्यवाही की जाय, जिससे आपका मनोरथ सिद्ध हो जाय तो मैं नहीं समझता कि उसमें सरकारिया कमीशन रिपोर्ट हमारी कुछ मदद कर सकती है । इसलिए इन दृष्टिकोणों को पहले हमें स्पष्ट करके चलना होगा ।

महोदया, श्री वेंकटस्वैया जी ने संविधान के अंतर्गत अपने कर्त्तव्य का पालन किया है, निडरता के साथ पालन किया है और सही मायनों में किया है । इसलिए मैं समझता हूं कि मान्यवर सदन में जो हमारे विपक्षी दल के नेताओं ने कल अपने भाषणों में कुछ शब्द उनके बारे में कहे हैं, मैं तो कहूंगा वेंकटस्वैया जो एक बहुत पुराने फ्रीडम फाइटर हैं राष्ट्रभक्त हैं, उन्होंने जो कुछ किया है राष्ट्र के हित में किया है, कर्नाटक के लोगों के हित में किया है । यदि आपको उदाहरण देखना है तो आप देख लीजिए जो इनकी पब्लिक मीटिंग हुई थी, जिसका एलान राष्ट्रपति शासन की रिफारिश के बाद नहीं बल्कि बहुत देर पहले किया हुआ था बड़ा ढिंढोरा पीटा हुआ था नेशनल फ्रंट वालों ने कि बंगलौर में एक बहुत बड़ी रैली होगी, जिसमें टेकर कमीशन की रिपोर्ट के ऊपर चर्चा की जाएगी और सारी रिपोर्ट पेश करने के लिए सरकार पर दबाव दिया जाएगा । उस रैली में कहा गया था कि वी०पी० सिंह साहब जाएंगे, बड़े लोग जाएंगे । महोदय, यह रैली कहां की गई ? मैं अच्छी तरह से जानता हूं, यह उस एरिए में की गई, जो कि जनता पार्टी का एक बहुत बड़ा गढ़ माना जाता था चन्द्रे गौडा जी मेरे साथ इत्तिफाक करेंगे कि इतने प्रचार के बावजूद भी लोगों में उदासीनता थी इन नेताओं के प्रति, जिन्होंने अपनी सरकार का अपने हाथों से खून किया, कि वहां लोग बहुत थोड़ी संख्या में पहुंचे और जो पहुंचे, उन्होंने भी राष्ट्रपति शासन के ऊपर प्रश्न किए

और जब उत्तर देना शुरू किया तो जो आए हुए लोग थे वह भी जाना शुरू हो गए। यह रैली इनकी फ्लाप हुई, बुरी तरह से फेल हुई। आपको इससे कुछ सबक लेना चाहिए।

महोदया, कल इन्होंने बड़ी ऊंची आवाज में कहा था कि कर्नाटक के लोग इसका जवाब देंगे। हम मानते हैं निर्णय तो कर्नाटक के लोगों के हाथ में है। आपकी रैली को अगर कुछ गिना जाय तो कर्नाटक के लोगों को बात पता चल ही गई है और जैसे-जैसे लोगों के सामने तस्वीर खोली कि इन वर्षों में विधान सभा में बैठकर क्या-क्या खिचड़ी पकती रही, तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि कर्नाटक के लोग जरूर जवाब देंगे। और जवाब देकर वह जो निर्णय करेंगे उसका पूरा फायदा कर्नाटक के लोगों को जाएगा। देशवासियों को वहां से एक बहुत शानदार संदेश जाएगा कि कर्नाटक के लोग अपने हितों को बहुत अच्छी तरह से पहचानते हैं।

महोदया, मैं नहीं समझता हूं कि मुझे उन सभी बातों में जाना चाहिए जिनका उल्लेख कल किया गया। उपेन्द्र जी बड़े जोर से रामलाल जी का नाम ले रहे थे, वह रामलाल जी कहां हैं? अरुण नेहरू का नाम लिया गया, वह अरुण नेहरू कहां हैं? महोदया, मुझे याद है सन् 1977 में गुजरात में लोगों की चुनी हुई एसेंबली, अच्छी भारी सत्ता में जो एसेंबली थी उसे नहीं चलने दिया गया। एक वयोवृद्ध नेता सड़क पर बैठ गए कि क्योंकि वह कांग्रेस के मुख्य मंत्री थे, अनशन करके, बगैर किसी कारण के उस सरकार को तुड़वा दिया। आज वह कहां हैं? वह उस वक्त भ्रष्ट थे और भ्रष्ट होने के नाते उनको निकाला गया था। ...(व्यवधान)... मालूम नहीं कहां हैं? मुझे तो हर हफ्ते देखना पड़ता है कि जनता दल का कौन नेता कहां है। उनका वीकली प्रोग्राम रहता है। कुछ का डेली रहता है।

महोदया, आज देश के सामने एक बात स्पष्ट हो गई है कि जनता दल के नाम का जो बवंडर इस देश की राजनीति में खड़ा हुआ था, उसका भट्ठा बैठ गया है बंगलौर में। महोदया, जनता दल के अध्यक्ष ने इलाहाबाद का चुनाव लड़ा ये आदर्शों की बात करते हैं। आर०एस० एस० वालों ने उन्हें इस बात पर कोसा कि हम ने तुम्हारी मदद की थी, तुम कहते थे कि हम राम जन्मभूमि के मामले में मदद करेंगे। अब दूसरी तरफ जा रहे हो। हाजी साहब ने तो चिट्ठी लिख दी कि मैंने तो यह सारे देश से पैसा इक्कट्ठा कर दिया था कि तुम हमारे लिए बाबरी मस्जिद लाकर दोगे ...(व्यवधान)... वह चिट्ठी छपी है, वर्मा जी। आप क्या बात करते हैं। आपको तो लज्जा आनी चाहिए ऐसे दोमुखिया नेता के ऊपर जो केवल एक सीट जीतने के लिए दो वर्गों के लोगों को एक ही वक्त पर बुद्धू बना सकता है। ऐसे नेता को लेकर अगर आप कांग्रेस का विकल्प सोचेंगे तो मैं समझता हूं कि यह असम्भव है।

श्री वीरेन्द्र वर्मा : यह गृह मंत्री बोल रहे हैं।

श्री बूटा सिंह : महोदया, इन बातों का उल्लेख मैं केवल यहां ही नहीं कर रहा हूं। मैं गृह मंत्री होने के नाते जिम्मेदारी से कह रहा हूं कि जो बात मैं कह रहा हूं वह रिकार्ड में आई हुई चलिए वे यहां नहीं हैं, लोकसभा में तो हैं। वहां खड़े होकर जवाब दें। अगर उन में हिम्मत है तो जो चीजें मैं कह रहा हूं उनका जवाब दें। वे क्यों मौन हैं? यह आप उनसे पार्टी मीटिंग में पूछिए। इसलिए मैं तो आपको इतना ही कहूंगा कि वर्तमान परिस्थिति को सामने रखते हुए हम खुश नहीं हैं। हम नहीं चाहते हैं कि लोगों के द्वारा चुनी हुई सरकार गिरे। मगर ये जनता दल के लोग यह चाहते हैं कि प्रांत का राज्यपाल उनकी पार्टी की सरकार को बचाने के लिए मैदान में उतरे, तो यह असम्भव है। जिन सिद्धांतों का नाम लेकर ये आज तक लोगों को बहका रहे थे उन्हीं सिद्धांतों का, जो इस वक्त लोगों के सामने प्रकट हो रहे हैं, आपको पता चल जाएगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि कर्नाटक के लोग वक्त आने पर सही फैसला देकर यह सिद्ध करेंगे श्री वेंकटसुबैय्या का फैसला सही था और ठीक था।

[श्री बूटा सिंह]

उसी को ध्यान में रखते हुए मैं प्रार्थना करूंगा कि उसपर अपना समर्थन व्यक्त करते हुए श्री गुरुपदस्वामी जी के इस मोशन को रिजेक्ट करें और जो हमारा रिजोल्यूशन पेश किया गया है उसे सर्वसम्मति से पास करें।

SHRI M. S. GURUPADASWAMY (Karnataka): Madam, Deputy Chairman, I heard almost all the speeches made by my friends in the House with rapt attention since yesterday. I heard the speech of my friend... (*Interruptions*) I did not hear what you said, Mr. Tewari.

SHRI SURESH KALMADI (Maharashtra): He says your telephone was tapped by Mr. Hegde.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: Tewariji, you have become Goebbles of the Government now. So, thank you for reminding me.

THE DEPUTY CHAIRMAN: He is Minister for Information; so he brought the information.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: Thank you for your information.

Madam, I listened to my friend, Mr. Buta Singh with attention. He began his speech with anguish. While doing so, he referred to my speech which I made yesterday, I would like to say that I have no animus of any sort against Mr. Buta Singh. I remember, he worked with me very closely. I have not forgotten those days. We were working like brothers; I have not forgotten that. Even now I regard him as my own brother. But brothers also differ and fall apart. Madam, he said, I lost my mental balance. I do not take exception to that because that is par of the game. I do not know whether I have lost mental balance or he has lost mental balance. People have to judge. I leave it at that.

THE DEPUTY-CHAIRMAN: Well you were angry yesterday with the Chair also.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: I was angry with you, Madam, because you were so charming and aggressive, both. How can I forget you as my neighbour? Neighbours also do quarrel.

SHRI N. K. P. SALVE: Every charming lady is aggressive.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: I do not want to say much I like you; I like your neighbourhood.

SHRI DIPEN GHOSH: Such a candid expression.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: So, I do not have any bad motive at all in my liking for you.

SHRI DIPEN GHOSH: Another candid expression.

THE DEPUTY CHAIRMAN: That was really surprising to me and to everybody else.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: I was referring to Mr. Buta Singh.

SHRI BUTA SINGH: But you are a lovable person otherwise.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: Let me assure him that I like him as a person and that liking continues: that will not divide us. What divides us is politics. He understands it and I understand it I am sorry. He made a reference to the community 1 P.M. he belongs. I was really touched. I am very sensitive. Let me tell him My whole career as a Politician as a political worker started with the downtrodden. I worked for them. Never, even in my dream, I regard any human being less than me. Therefore, when he said something in pain, it touched me. I would like to assure him that I have got the highest respect for him as a person. But

I said yesterday that Mr. Buta Singh, as Home Minister, took a lot of interest, unusual interest, in the affairs of Karnataka since the Janata Government came to power. It is not an one-day affair. I am not just referring to his intervention now. I said it yesterday. Since the Janata Government came to power six-and-a-half years ago... (*Interruptions*)

SHRI BUTA SINGH: Mr. Gurupadaswamy, with all respect and humility, I would like to point out that as the Home Minister it is one of my duties, to maintain very good relations with all the State Governments, to maintain better rapport between the Centre and the States.

SHRI N. K. P. SALVE: Intimate relations.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: I am not taking any exception to the Home Minister maintaining good relations with all the State Governments. What I say is, whether we, in the Opposition, here, or whether the people in the country, think that the same yardsticks and the same norms are applied and whether the same kind of relationship is maintained between the Centre and the State Government, what ever may be the political complexion of those Governments. I want to raise this question.

The people have to decide ultimately; I know. But I humbly submit that if the Home Minister or the Government of India had maintained, or maintain, the same kind of relationship with all the State Governments, applied the same norms and the same standards to all of them, irrespective of the fact that they are controlled, run, by various political parties, the differences, the tensions, the conflicts and, I may say, the confrontations, sometimes, would not have arisen. The cry that the State Governments have not been treated properly by the Central Government controlled by another party would not have arisen. There would have been perfect harmony, coordinality and understanding. Does it exist? It does not. I want to ask the Home Minister. He is the Home Minister of the country. He does not belong only to his political party. I say again. Wherever non-Congress Governments have come to power, the Centre, run by the Congress Party, has treated these Governments differently. They have applied different standards and different norms. They have not applied the same norms and the same standards. My friend Buta Singh quoted what happened in 1977. He quoted. (*Interruptions*)

SHRI JAGESH DESAI (Maharashtra): What had happened?

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: I come to that. Yes, Janata Government had done wrong. But...

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY: Do you mean to say, Janata Party or the Janata Dal party to which you belong?

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: It ws the Janata Government. You were there.

SHRI DIPEN GHOSH: You cannot forget your past.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: Mrs. Indira Gandhi imposed emergency because of her own compulsions. Should we say that emergency is justifiable, should be repeated?

SHRI BUTA SINGH: Yes, Mr. V. P. Singh supported it at that time. He agreed at that time.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: He may have. We have fought on that.

SHRI BUTA SINGH: Shri V. P. Singh is the President of the Janata Dal. He was the one who was responsible for the emergency in 1975. Why do you forget it? Everybody knows about that.

DR. BAPU KALDATE: That way, Jagjivan Babu was there. Why do you forget that?

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: I know, several people were there at that time. They are also with us here.

SHRI DIPEN GHOSH: Where you had been at that time, that has to be seen.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: Mr. Rajiv Gandhi was never a Congress-man in earlier days. He is now heading the Congress Government.

SHRI BUTA SINGH: Do you mean to say that Mr. Arun Nehru was in Congress earlier than Mr. Rajiv Gandhi? (*Interruptions*)

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: He was not a member... (*Interruptions*). I do not hear you.

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY: May I ask whether Janata Dal was against or in favour of emergency?

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: Janata Dal was always against emergency. It is very obvious.

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY: Did your President say that? (*Interruptions*).

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: My point is, when we are discussing about value-based principles, individuals do not matter. We are now discussing important issues. We are against the emergency. Therefore, my question is, should we repeat the emergency? A blunder was committed in the past. Should we repeat it? What is important here is to see whether right course was followed and what is the right course in the present situation? Mr. Buta Singh narrated various events, individual lapses, Ramakrishna Hegde did this, did that. Yes, he might have.

SHRI N. K. P. SALVE: Individuals have taken that money.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: But the basic point is whether the goodness of a Government or a badness of the Government in other words whether the Government is good or bad, should be decided by the Governor or should be decided by the elected Assembly. Secondly, was there breakdown of the constitutional mechanism? What is breakdown of the constitutional mechanism? There was the Assembly. There might have been letters written by 19 MLAs to the Governor. Those letters will not create a crisis. What creates a crisis is whether the Government can be carried on constitutionally or not. The Assembly was there. It could be summoned, could have been summoned. It was to meet on the 27th. It could have been summoned earlier, if need be, and the strength of the Government could have been tested. If Bommai was not having a majority in the Janata, he could have been changed.

SHRI BUTA SINGH: Bommai is not in Janata Party.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: I said Janata... Why are you so sensitive? Madam, my view is that the constitutional machinery was intact. There was no break down. The only forum that could have tested the fate of the Ministry was the Assembly... I have said about horse-trading yesterday.

I have told you that there was no horse-trading. Madam, what happened in Bihar?

SHRI BUTA SINGH: There was no horse-trading there.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: Don't tell me that. It was worse than horse-trading. Worse than horse-trading has happened in Bihar. The Government could not pass the budget. The Assembly had to be adjourned. It was a worse crisis. There was a break down of constitutional machinery. But no President's rule was imposed in Bihar.

SHRI BUTA SINGH: Let me tell you that nothing unconstitutional has happened in Bihar. In Bihar, the legislature party elected its leader. That is all. You could have done it. You could have given the chief ministership to somebody else. There is no parallel between Bihar and Karnataka.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: In Bihar, in Orissa. Your MLAs come to Delhi so often.

SHRI BUTA SINGH: It is their party. They can come.

SHRI M.S. GURUPADASWAMY: Worse than horse-trading is going on in Orissa and Bihar. It has been going on in Gujarat today. Nothing happens there. And in Rajasthan Congressmen are abused, black mailed by their own leadership to keep them in check and under control. Worse than horse-trading is being carried on and still you do not want to impose President's rule. I do not want you to impose President's rule. I am not for it. In Karnataka, our Government was an eyesore for you from the very beginning.

You talk about the Governor. I have got the greatest respect for the Governor. He was my friend. We have worked together also in the past. I have got the greatest respect for Mr. Venkatasubbiah as a friend. We praised Mr. Venkatasubbiah as a Governor when he recognised the Janata Dal. He took a right decision; that is why we praised him. That was the only decision; that was right. Therefore we praised him. But is it not a fact, Mrs. Margaret Alva, that some of your colleagues—I do not want to name them here—just three-four days back, went to the Prime Minister and requested the Prime Minister to remove Mr. Venkatasubbiah as the Governor. (*Interruptions*) Is it not a fact? I know what happened. Some of your colleagues definitely had gone to the Prime Minister and requested him to change the Governor..... You can deny that. But it is a fact.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI M. M. JACAB): You are trying horse-trading inside the party.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: His resignation had been published in the press. Is it not a fact that he submitted his resignation?

SOME HONOURABLE MEMBERS: No.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: You say "No" to everything. Everybody knows that he had tendered his resignation.

SOME HONOURABLE MEMBERS: No!... (*Interruptions*)...

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: I think Mr. Buta Singh knows more than you do. Therefore, he is not saying anything at all. Madam, my basic question is...

SHRI VITHALRAO MADHAVRAO JADHAV (Maharashtra): How many basic questions have you?

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: Only one.

SHRI VITHALRAO MADHAVRAO JADHAV: You are saying the same thing again and again and yet it is only one basic question.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: What shall I do? Basic question is only one.

SHRI KAMAL MORARKA (Rajasthan): You cannot understand.

SHRI VITHALRAO MADHAVRAO JADHAV: Yesterday also he raised the same question several times. Now he is raising the same question. How many basic questions has he?

SHRI KAMAL MORARKA: Till you understand, he will go on raising it.

SHRI VITHALRAO MADHAVRAO JADHAV: I understand better than you do... (*Interruptions*) ...

SHRI KAMAL MORARKA: Yet, you do not know. Overhead transmission...

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: Madam, the Constitutional machinery has been subverted.

SHRI BUTA SINGH: By the Janata Dal.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: By you—by the Home Minister.

SHRI BUTA SINGH: No.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: By the Home Ministry.

SHRI BUTA SNGH: I swear, no.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: There has been an attempt on the part of the Centre to uproot, unsettle and destabilize our Government, and they succeeded. As I said yesterday, the same arguments, the same reasons which compelled you to impose President's rule in Karnataka very much apply to all your Congress Governments in the States and they will apply all the more to the Centre? There is mismanagement here, corruption here, inefficiency here. There are various scandals surrounding your Government, beguiling your Government. The Government which should resign immediately is your Government at the Centre, not the Karnataka Government. You should resign. Mr. Rajiv Gandhi's Government should tender its resignation. I demanded it yesterday, and I repeat it today, on the same grounds. ... (*Interruptions*) ...This is a very unethical Government, an immoral Government. It has no right to continue any longer.

SHRI VITHALRAO MADHAVRAO JADHAV: Madam, who is he to say this?

... (*Interruptions*) ...

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: Finally, Madam, President's rule has been imposed and, as Mr. Buta Singh said, people will reply. The people of Karnataka will reply very soon in the coming election. The people of Karnataka will reply—suitably reply, appropriately reply—to the action taken by the Centre. In this context I demand, let there be an early election. Let there be an election within three, four months. Let us go to the polls, let us test our strength. Then you will realize who will win and who will not win. You are talking of the people, and we are also talking of the people, and we are also talking of the him announce the dates very soon and then within three four months let us go to the polls and test our strength.

Thank you, Madam.

SHRI BUTA SINGH: Madam, he has not pressed his Motion.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I shall put first the Resolution moved by Shri Buta Singh to vote.

SHRI RAM JETHMALANI (Karnataka): Madam, I asked for an opportunity for personal explanation. I have been mentioned twice.

THE DEPUTY CHAIRMAN: For what?

SHRI SATYA PRAKASH MALAVIYA: Because he has referred to him twice.

SHRI RAM JETHMALANI: He has referred to me twice in his reply. I have a right to make a personal explanation.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: He was referred. (*Interruptions*)

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Home Minister, did you make any reference?

SHRI BUTA SINGH: I did not mention his name.

SHRI KAMAL MORARKA: It is on record Madam. He has mentioned. How can he say that he did not mention?

THE DEPUTY CHAIRMAN: Did you mention?

SHRI BUTA SINGH: No.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Buta Singh is sitting here. I asked him before the whole House whether he mentioned any Member's name, Mr. Jethmalani's name. I did't think he has mentioned it.

SHRI KAMAL MORARKA: We have all heard it.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I did not hear him mentioning his name. (*Interruptions*)

SHRI RAM JETHMALANI: Madam please hear me. (*Interruptions*) First he mentioned my name. The second time he mentioned that a distinguished lawyer appeared before the Commission and that the Commission was wound up. He referred to me.

SHRI PARVATHANENI UPENDRA: Madam, he mentioned. (*Interruptions*)

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Home Minister, did you mention his name?

SHRI BUTA SINGH: Madam, if I remember correctly, I only said "a lawyer". I did not mention his name. It is for you. If you want to allow him to speak we have no objection.

THE DEPUTY CHAIRMAN: As far as I know, I have been listening to the speech... (*Interruptions*) Mr. Upendra just have patience. We are all here. I was hearing Mr. Buta Singh's speech with rapt attention. He mentioned "a lawyer." Now there are so many lawyers in this House. I have asked him whether he mentioned the name of the Member. He said, "No." (*Interruptions*)

SHRI PARVATHANENI UPENDRA: With regard to his election to Rajya Sabha he mentioned his name.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: He cannot denigrate him.

SHRI PARVATHANENI UPENDRA: While referring to the price of MLAs he referred to his name. When he was elected to Rajya Sabha the price has gone up, he has said that.

SHRI RAM JETHMALANI: Let him say that he did not refer to me at all.

SHRI DIPEN GHOSH: Let him repeat what exactly he said.

SHRI BUTA SINGH: Madam, I now remember that I said that during the Rajya Sabha election I was an observer from my party side and a lawyer was contesting. That is all.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: A lot of money flowed, he said. (*Interruptions*)

SHRI PARVATHANENI UPENDRA: We all heard it. So many people cannot be wrong. You check up the record.

SHRI BUTA SINGH: I did say that money was paid to my party people, and we brought that money to the Speaker. did say all these things. But I did not mention his name Madam, we have no objection if you want to permit him to speak. But I have not mentioned his name.

SHRI PARVATHANENI UPENDRA: Please consult the record.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I have heard him. It does solve the problem because I do not remember Mr. Buta Singh mentioning any name.

SHRI RAM JETHMALANI: Madam, may I have one assurance? After you read the proceedings if you find that I have been mentioned twice, you will give me an opportunity again.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I will look into the record and see if your name is mentioned, and if so, I will give you permission.

SHRI RAM JETHMALANI: At the moment we have the statement from the Home Minister that he has not referred to me at all.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I assure the House that if your name has been mentioned by the Home Minister in the record, I will give you permission. If your name has not been mentioned then, many things are said in the House, and I cannot allow every Member from this side or that side to keep on giving personal explanations. *(Interruptions)*

SHRI RAM JETHMALANI: He said that Mr. Ramakrishna Hegde has done ... *(Interruptions)*

THE DEPUTY CHAIRMAN: Please sit down.

SHRI RAM JETHMALANI: How can he say on the floor of the House like this? *(Interruptions)* If Mr. Buta Singh's statement is found to be incorrect, what will happen? You are afraid to... *(Interruptions)*

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now, the matter is closed. I shall first put the Resolution moved by Mr. Buta Singh to the vote of the House.

The question is:

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: Madam, the motion has to be put to the vote of the House first.

THE DEPUTY CHAIRMAN: No. The propriety is, since the Resolution was first and the Motion second, the Resolution will come...

SHRI PARVATHANENI UPENDRA: The motion is to remove the Governor. Since the motion is to censure the Governor, how can you take action if the resolution is approved?

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: Please check up the rules.

SHRI PARVATHANENI UPENDRA: Once the proclamation is approved, how can you censure him?

THE DEPUTY CHAIRMAN: May I say a word? The Resolution and the Motion were discussed together, but the Resolution was moved by the Government. So it has to be voted first and the Motion was for a different thing and not for the same thing.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: Though they are discussed together they are separate. But if the first motion is passed, then the second motion cannot be put at all.

THE DEPUTY CHAIRMAN: This is the rule. Because the Government Resolution is for something else and your Motion is for the removal of the Governor, the proclamation has to be taken separately and that has to be taken first.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: Madam, we cannot be a party to this resolution at all.

(At this stage some hon. Members left the Chamber.)

THE DEPUTY CHARMAN: I shall now put the Resolution moved by Shri Buta Singh to the vote of the House.

The question is:

"That this House approves the Proclamation issued by the President on the 21st April, 1998, under

article 356 of the Constitution in relation to the State of Karnataka."

The motion was adopted.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I shall now put the motion moved by Shri M. S. Gurupadaswamy to the vote of the House.

The question is:

"That this House disapproves the action of the Governor of Karnataka in recommending to the President the dismissal of the democratically elected Government of Karnataka and recommends that the Governor be recalled."

The motion was negatived.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now we take up Special Mentions.

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY: when are we adjourning for which?

THE DEPUTY CHAIRMAN: We are dispensing with lunch today because we have got a heavy business here today. We are dispensing with lunch hour, not with lunch. You are most welcome to go and have your lunch and come back. But the House will be working because we have a heavy business.

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY: Madam, there is a lunch for those elected from UP and I have a special mention also. So, let there by a lunch hour.

THE DEPUTY CHAIRMAN: No. You have to decide between lunch inside or outside if you have a special mention.

SPECIAL MENTIONS
Shortage of Newsprint

SHRI VISHWA BANDHU GUPTA (Delhi): Madam, I would like to bring to the notice of the House a matter of great concern. It relates to very exorbitant and very high and excessive price of newsprint today. This is a matter which affects all the neswpapers, particularly the small and medium newspapers in this country. Since we believe that the Fourth Estate is an essential part of democracy, it is important that we look at the problem of newsprint which is important from the point of view of freedom of expression.

[The Vice-Chairman (Shri H. Hanumanthappa) in the Chair.]

Sir, you know during 1981-82 the price of newsprint was Rs. 4,448 per tonne, while in April this year it has gone up to Rs. 10,160. Now, you would notice that the prices have more than doubled and it is not possible for newspapers to continue to increase their circulation and serve the readers properly at this price. Now, I would like to bring to your notice that there is indigenous production also. The requirement of newsprint for us in 1987-88 was near about 3 lakh tonnes. This was met partly by the indigenous mills and partly through imports. Now, it has been said by the Ministry of Information and Broadcasting that the world price of newsprint has increased. But kindly refer to the situation today. The imported price of newsprint (glazed) which was around Rs. 6000 per tonne is over Rs. 13,265 per tonne. Why I am referring to this matter is that practically everybody is affected by the hike in the price of newsprint. The Ministry of Information and Broadcasting as well as the Ministry of Industry has to take stock of the situation and try to cut down the newsprint price. This is not all, Sir. In the last quarter of April the price was around Rs. 10,000 and I am informed by various sources that the prices are going to be increased further by another Rs. 4,000 per tonne. If that happens this will certainly be a death-knell for the newspaper industry and particularly small and medium newspapers in this country.

SHRI RAMESHWAR THAKUR (Bihar): Mr. Vice-Chairman, Sir I join my friend, Mr. Vishwa Bandhu Gupta in his sentiments and particularly I would say that some positive